

भारत और अमेरिका में स्वास्थ्य सेवाएं

दिनेश पी. सिन्हा

भारत हर साल स्वास्थ्य पर 18.7 अरब डॉलर खर्च करता है। देश की 1.10 अरब आबादी के हिसाब से देखें तो हर व्यक्ति की सेहत पर करीब 17 डॉलर खर्च होते हैं। जाहिर है, देश में स्वास्थ्य सेवा की स्थिति 'सेहतमंद' कतई नहीं है। इसीलिए आम लोगों का स्वास्थ्य भी संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। भारत में आम तौर पर ग्रामीण इलाकों और शहरी गरीबों में मुख्य रूप से प्रसव, जच्चा-बच्चा की सेहत, बच्चों में कुपोषण और संक्रमण सम्बंधी बीमारियां व्यापक तौर पर विद्यमान हैं। ऐसे में बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाए जाने की ज़रूरत है।

संक्रमण काल

हाल ही में किए गए कई अध्ययन बताते हैं कि देश में जीवन शैली (लाइफ़ स्टाइल) की वजह से पैदा होने वाली बीमारियां (जैसे हृदयाघात, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, कैंसर आदि) तेज़ी से पैर पसार रही हैं। इससे न केवल उच्च मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग के लोग ग्रस्त हैं, बल्कि अब तो ये बीमारियां ग्रामीणों में भी आम होती जा रही हैं। वैसे इसमें अचरज की कोई बात नहीं है। जैसे-जैसे कोई देश विकास के पथ पर आगे बढ़ता है, संक्रामक बीमारियां व कुपोषण की समस्याएं कम होती जाती हैं और इनका स्थान मधुमेह, रक्तचाप जैसे जीर्ण रोग और अतिपोषण व मोटापे से जुड़ी बीमारियां लेती जाती हैं। दुनिया के कई हिस्सों में ऐसा होता रहा है जिसे रोग प्रसार संक्रमण के नाम से जाना जाता है। भारत भी इसी संक्रमण काल से गुज़र रहा है।

अस्पताल बनाने से क्या होगा

एक तरफ़ हम कुपोषण और संक्रामक बीमारियों से जूझ रहे हैं जिसके लिए हमें व्यापक पैमाने पर आधारभूत स्वास्थ्य

बीमा के अभाव में हर पांच में से एक अमरीकी वह उत्तम चिकित्सा सुविधा हासिल ही नहीं कर पाता है, जो उससे चंद कदमों की दूरी पर ही उपलब्ध है।

सुविधाओं की ज़रूरत है तो दूसरी ओर वैश्वीकरण के इस युग में देश के बड़े शहरों में अत्याधुनिक अस्पताल बनते जा रहे हैं, जहां उच्च मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हैं। हाल ही में जारी आंकड़ों के अनुसार अमरीका, युरोपीय देशों व अन्य मुल्कों के करीब डेढ़ लाख मरीज़ हर साल इलाज के लिए भारत आते हैं। वे इस दौरान 33.30 करोड़ डॉलर खर्च करते हैं। लेकिन केवल अत्याधुनिक व सर्वसुविधा सम्पन्न अस्पतालों के निर्माण से ही देश के लोगों की सेहत नहीं सुधारी जा सकती। इसे अमरीका के मामले से समझा जा सकता है जिसका वर्णन आगे किया जा रहा है।

खर्च ही समाधान नहीं

अमरीका हर साल स्वास्थ्य सेवाओं पर 2,200 खरब डॉलर खर्च करता है, जो 30 करोड़ आबादी के हिसाब से प्रति व्यक्ति सात हज़ार डॉलर बैठता है। इससे साफ़ है कि वहां लोगों के लिए दुनिया की सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हैं, लेकिन अत्यधिक महंगी होने की वजह से सभी अमरीकी इनका लाभ नहीं उठा पाते। वहां करीब छह करोड़ लोगों का चिकित्सा बीमा नहीं है। इस प्रकार हर पांच में से एक अमरीकी वह उत्तम चिकित्सा सुविधा हासिल ही नहीं कर पाता है, जो उससे चंद कदमों की दूरी पर ही उपलब्ध है।

अगर उन छह करोड़ अमरीकियों को छोड़ दें जिन्हें अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं हासिल नहीं हैं तो आंकड़ों से तो यही आभास होता है कि शेष अमरीकी सेहतमंद हैं। क्या वाकई ऐसा है? वर्ष 2000 में किए गए कुछ अध्ययन कुछ अलग ही कहानी कहते हैं।

रिपोर्टों के अनुसार कम से कम पांच करोड़ अमरीकी उच्च रक्तचाप से ग्रस्त हैं और उनमें से

भी एक तिहाई को तो इसका भान भी नहीं है। जिन्हें इस बीमारी का पता चल चुका है, उनमें से भी मात्र 27 फीसदी का ही सही तरीके से उपचार हो रहा है। उच्च रक्तचाप से स्ट्रोक, हृदयाघात और किडनी

अमरीका हर साल स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रति व्यक्ति सात हज़ार डॉलर खर्च करता है। अमरीका में 29.40 करोड़ वयस्क लोग किसी न किसी बीमारी से पीड़ित हैं। अमरीका की कुल आबादी ही 30 करोड़ है तो इसका मतलब यह है कि सुविधाओं की भरमार के बावजूद एक ही व्यक्ति कई बीमारियों से ग्रस्त है।

सम्बंधी बीमारियों की आशंका बढ़ती है। इसके अलावा साढ़े चार करोड़ अमरीकियों में पूर्व-उच्च रक्तचाप है जिससे कई बीमारियों और असमय मौत की आशंका रहती है, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से इसके बारे में बहुत कम लोग ही जानते हैं।

वर्ष 2005 में किए गए एक सर्वे के अनुसार 2 करोड़ 56 लाख वयस्क अमरीकी हृदय सम्बंधी बीमारियों, 52 लाख लोग स्ट्रोक, दो करोड़ 80 लाख फेफड़ों की बीमारी, एक करोड़ 60 लाख लोग कैंसर और एक करोड़ 80 लाख लोग मधुमेह की बीमारी से ग्रस्त पाए गए। इसी दौरान तीन करोड़ 80 लाख लोग किडनी सम्बंधी बीमारियों और करीब चार करोड़ लोग मधुमेह की पूर्व अवस्था (प्री-डायबिटिक) से जूझ रहे थे।

ये सभी बहुत ही गंभीर किस्म की बीमारियां हैं। कई लोग इनसे मारे जाते हैं और जो लोग जीवित रहते हैं, उनका जीवन भी कोई जीवन नहीं रह जाता। इनके अलावा भी कई ऐसी बीमारियां हैं जिनसे लोग मरते तो नहीं हैं, लेकिन जीवन की गुणवत्ता में काफी कमी आ जाती है।

सर्वे में यह भी सामने आया है कि अमरीका के करीब सात करोड़ वयस्क किसी न किसी प्रकार की जोड़ों की बीमारी से ग्रस्त हैं और इनमें भी अधिकांश लोग ऑस्टियोआर्थ्राइटिस से पीड़ित हैं। करीब एक करोड़ लोग अस्थिछिद्रता के शिकार हैं। पांच करोड़ वयस्क एलर्जिक राइनिटीज़, दो करोड़ दमा और करीब तीन से चार करोड़ लोग जीर्ण साइनस जैसी बीमारियों के साथ ज़िंदगी जी रहे हैं। इसके अलावा करीब 80 लाख वयस्क उम्र की वजह से आंखों की रोशनी कम होते जाने से परेशान हैं, तो 30 लाख लोग एनीमिया से ग्रस्त हैं। तीन करोड़ लोग माइग्रेन, 1.90

करोड़ लोग डिप्रेशन, 40 लाख लोग अल्ज़ाइमर और पांच करोड़ लोग पुराने दर्द से पीड़ित हैं।

इस प्रकार से अमरीका में 29.40 करोड़ वयस्क लोग किसी न किसी बीमारी

से पीड़ित हैं। अमरीका की कुल आबादी ही 30 करोड़ है तो इसका मतलब यह है कि एक ही व्यक्ति उपरोक्त वर्णित कई बीमारियों से ग्रस्त है। इसलिए इन आंकड़ों का अर्थ यह भी नहीं निकाला जाना चाहिए कि पूरी की पूरी आबादी ही बीमारियों के जाल में फंसी है। यह तस्वीर सुखद तो कदापि नहीं है। इससे साफ़ जाहिर है कि अमरीका में स्वास्थ्य सुविधाओं की भरमार के बावजूद वहां की जनता सेहत के मोर्चे पर कई बीमारियों से संघर्ष कर रही है।

ऐसा माना जाता है कि संक्रामक बीमारियां अमरीका में अब अतीत की बात हो चली हैं, लेकिन यह पूरा सच नहीं है। करीब 6.80 करोड़ लोग यौन वाहित बीमारियों से ग्रस्त हैं और हर साल डेढ़ करोड़ नए मामले जुड़ जाते हैं। इसके अलावा भी प्रति वर्ष संक्रमण सम्बंधित 17 लाख अन्य मामले सामने आते हैं जिनमें से 99 हजार मामलों में पीड़ित की मौत भी हो जाती है। संक्रमण रोगों की यह तो केवल आधी-अधूरी सूची है। स्थिति इससे भी कहीं अधिक गंभीर है।

छिपे हुए खतरे

ये तो हुई रोगों की बात, लेकिन इनके अलावा भी ऐसी परिस्थितियां हैं जिन्हें बहुत से लोग बीमारी की श्रेणी में तो नहीं गिनते हैं, लेकिन स्वास्थ्य के लिए घातक हैं। ये ऐसे खतरे हैं जो आगे चलकर गंभीर बीमारियों में परिवर्तित हो सकते हैं। यदि इन स्वास्थ्य परिस्थितियों के आंकड़ों की बात करें तो हमें 'बीमार' लोगों में उन 3.4 करोड़ लोगों को भी शामिल करना होगा जिनका हड्डियों का घनत्व सामान्य से कम है यानी जो 'ऑस्टियोपोनिया' से ग्रस्त हैं। 3.7 करोड़ लोग उच्च कोलेस्ट्रॉल से पीड़ित हैं और 6.8 करोड़ लोग उच्च कोलेस्ट्रॉल की सीमा रेखा पर खड़े हैं। इसके

अलावा हमें इस सूची में श्रवण सम्बंधी समस्या से ग्रस्त 3.25 करोड़ लोगों, अंधत्व की समस्या से ग्रस्त 34 लाख लोगों और पूरी

तरह दृष्टिहीन 10 लाख लोगों को भी शामिल करना होगा। इन्हीं में उन लोगों को भी सम्मिलित किया जा सकता है जो अनिद्रा के शिकार होते हैं। ऐसे लोगों की अनुमानित संख्या 5 से 7 करोड़ के बीच है। उन 25 फीसदी लोगों को भी नहीं भूलना चाहिए जो मोटापे से परेशान हैं और 35 फीसदी लोग ज़रूरत से अधिक वज़न से चिंतित हैं। इन लोगों को बीमार तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन ये गंभीर बीमारियों के द्वार पर ज़रूर खड़े हैं।

यहां सवाल किया जा सकता है कि आखिर अनिद्रा और मोटापे को इस श्रेणी में क्यों शामिल किया जा रहा है? ऐसा इसलिए क्योंकि भले ही ये सीधे-सीधे बीमारी न हों, लेकिन इनसे खराब सेहत के संकेत तो मिलते ही हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि अच्छी नींद लेने से सीखने और याद रखने की क्षमता बढ़ती है और कई ज़रूरी मानसिक व शारीरिक क्रियाओं को सहारा मिलता है। अनिद्रा की बीमारी कई अन्य बीमारियों की जनक है। इससे पार पाने के लिए हर साल 100 अरब डॉलर खर्च किए जाते हैं।

ऐसा अनुमान है कि अमरीका में हज़ारों मौतें केवल मोटापे की वजह से होती हैं। वहां वर्ष 2002 में मोटापे से सम्बंधित चिकित्सा खर्च 56 अरब डॉलर था, जबकि अधिक वज़न से सम्बंधित खर्च 37 अरब डॉलर। वॉशिंगटन पोस्ट की एक रिपोर्ट के मुताबिक अमरीकी लोग हर साल डाइट उत्पादों पर 34 अरब डॉलर खर्च करते हैं।

स्वास्थ्य और रोग

सेहत या स्वास्थ्य की व्याख्या हर व्यक्ति अलग-अलग तरीके से कर सकता है। जब मैं विश्व स्वास्थ्य संगठन के लिए काम करता था, तो हम उसे ही स्वस्थ व्यक्ति मानते थे जो शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और यहां तक कि आध्यात्मिक रूप से भी भला-चंगा हो, न कि सिर्फ

स्वास्थ्य सेवा मूलभूत मानवाधिकार है, लेकिन यह भी समझना होगा कि हर अधिकार कर्तव्य की भी मांग करता है। अधिकांश जीर्ण बीमारियां आम तौर पर हमारी जीवन शैली से सम्बंधित हैं और जीवन शैली को सुधार कर इनसे बचा जा सकता है।

उस व्यक्ति को जिसे कोई बीमारी न हो। अगर हम इस परिभाषा को स्वीकार करते हैं तो हमें ऐसी कई अवस्थाओं को भी ध्यान

में रखना होगा जिन्हें हम अब तक छोड़ते आ रहे हैं। अकेले अमरीका में ही डिप्रेशन और एकाग्रता भंग के 60 लाख मामले सामने आते हैं। इसके अलावा एक और विकार है, सामाजिक दुश्चिंता विकार, जिसके बारे में चिकित्सकों के अलावा अन्य बहुत कम लोगों को जानकारी है। विशेषज्ञों का मानना है कि एक अमरीकी की ज़िंदगी में यह समस्या पैदा होने की आशंका 13 फीसदी है, जो डिप्रेशन (17 फीसदी) से थोड़ी-सी ही कम है।

अभी तक हमने शारीरिक और मानसिक बीमारियों की ही चर्चा की है, लेकिन कई भावनात्मक मसले भी हैं जिनके बारे में वैज्ञानिक शोध में जुटे हुए हैं। गुस्सा, भय, खुशी, लालच, प्यार, स्नेह इत्यादि मानवीय भावनाएं अब तक न तो परिभाषित की गई हैं और न ही इनके असर के बारे में कुछ विशेष अनुसंधान हुए हैं। इन्हें अमूर्त ही माना जाता रहा है। लेकिन अब दुनिया भर के तंत्रिका वैज्ञानिक इन भावनाओं के शारीरिक और जैविक आधार को समझने का प्रयास कर रहे हैं ताकि दीर्घकालीन तनाव में इनकी भूमिका का पता लगाया जा सके। कई बीमारियां मानसिक तनाव की वजह से होती हैं।

अधिकार बनाम दायित्व

इससे किसी को इंकार नहीं है कि स्वास्थ्य सेवा मूलभूत मानवाधिकार है, लेकिन यह भी समझना होगा कि हर अधिकार कर्तव्य की भी मांग करता है। अधिकांश जीर्ण बीमारियां आम तौर पर हमारी जीवन शैली से सम्बंधित हैं और जीवन शैली को सुधार कर इनसे बचा जा सकता है। लेकिन हम हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का खुद ध्यान न रखकर निजी या सरकारी स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं की मांग करते रहते हैं। हम खानपान का ख्याल नहीं करते, व्यायाम नहीं करते और जब मोटापे से होने वाली बीमारियों

से घिर जाते हैं तो चाहते हैं कि उनका सही ढंग से इलाज हो। स्वास्थ्य के प्रति हमारी लापरवाही का इससे बड़ा नमूना और क्या होगा कि केवल धूम्रपान की वजह से हर साल फेफड़े के कैंसर के एक लाख 85 हजार मामले होते हैं। सिगरेट से दूर रहकर हम इस कैंसर से बच सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं करते हैं और जब इसके शिकार हो जाते हैं तो अत्याधुनिक उपचार की चाहत रखते हैं।

बदलना होगा खुद को

जैसा कि हमने ऊपर बताया, भारत में स्वास्थ्य रक्षा पर प्रति व्यक्ति 17 डॉलर खर्च किए जाते हैं, जबकि अमरीका में यह आंकड़ा सात हजार डॉलर प्रति व्यक्ति का है। इतने भारी-भरकम खर्च के बावजूद अमरीकी लोग कई बीमारियों से ग्रस्त हैं। इसी के मद्देनजर अब वहां के लोग अपनी जीवन शैली को बदलने की कोशिश कर रहे हैं। वे ज़्यादा

मात्रा में सब्जियां व सलाद खा रहे हैं, मांस के सेवन से बच रहे हैं और नियमित तौर पर जिम जा रहे हैं। भारत में इसका उल्टा हो रहा है। शाकाहारी लोगों का रुझान मांस खाने की ओर बढ़ रहा है, फास्ट फूड स्टालों की बाढ़ आई हुई है। पैदल चलना कम हो गया है, जहां ज़रूरत न हो, वहां भी मोटर कार या बाइक का इस्तेमाल किया जाने लगा है। अमरीकी योग व ध्यान की ओर प्रेरित हो रहे हैं और दुनिया भर को योग सिखाने वाले भारत के अधिकांश लोग इस विधा की उपेक्षा कर रहे हैं।

अंत में कहना होगा कि चाहे भारत हो या अमरीका, जब तक स्वास्थ्य को लेकर हम खुद जाग्रत नहीं होंगे, तब तक हमारी सेहत दांव पर लगी रहेगी। स्वास्थ्य रक्षा को लेकर हमें स्वयं के दायित्वों को समझना होगा। तभी हम स्वस्थ रह सकेंगे। स्वास्थ्य क्षेत्र बीमारों को उपचार ही प्रदान कर सकता है, सेहत नहीं। **(स्रोत फीचर्स)**